



एष न वा ज्ञेयं था कः सिद्धा पाता भाग
हं ॥ सिता सहित लोका र मन लिहा विद्या कः को
सि ल्या इ र स न मा कू हं ॥ न व न य ह्य र था कः क
को स्य न पु ज्ञा या कः अ इ ध्या त सु ष न वि ज्ञा क

॥ २ ॥ ए न शि त न हा क द को ज्ञा यो ध का ज्ञा न
था प नि ङ धा या कू हं ॥ हा क स या ज्ञ म लो कः इ
व र स्य वा मा कः र पु ना था हि था ज्ञ न ग कू हं ॥ १ ॥
का व पा ता र म या ना म हि था ज्ञ न ग कू हं ॥

३३
३३
३३

तगसिहाइया ॥ ॥ हरिहरिजिबरमदइवनविल
॥ ५॥ जिक्का लसु कि मनु नि दि का य ता शय य
लदवारनिलिग नावदि स न्य ॥ जिक्का य पु ता श
लिग न्य म पु र लि वा जि का य या ल ज ग र म द

॥ १॥ ॥ १॥ जिक्का य म द य कं जि ग थे चो न्य मा रु द वा
र निलिग नावदि स न्य ॥ म य लि म ली चा म य रु जि
दे या ता ल चा को च क न ता ल व हा र या त य ह ॥ २॥
त ग न वि घा वे ले मि षा स पो वि : त न्य : ग म चो तं

षोविहस्यदिलहं॥ सुदिनसुवेलासंसंगलया न
थसषोपमतेपिरननयावृह॥३॥ नवनसंगन
फस्मापवनषोविहस्यः॥ त्रिप्रभुषोत्पषात्पजाल
हं॥४॥ स्वतायाज्यालनकोत्पयावेलसः त्रिप्र

रुलिमत्पत्यरुहं॥५॥ सिंहलासा नगुति
फरंगा लोहतफुंगातस्यदिलहं॥ गगुलिदिनसं
वनसदितयात्रिप्रभुः ननाननयनकलरुहमूहः
जाह्नतमनाचोनत्रिप्रभुमतधकाः षोषानषो
विषुमिह्यातहं॥६॥ जयतिमा रुहायदिका

यथा लिखितं नः दिक्का ज्ञां मद्रु थं वृक्षा लूहं ॥ लून
नं धाला भलिवा गृह्म न धाला भलिवाः त्रिगु गल
तयांतय मद्रुहं ॥ १७ ॥ लुथा हपां दना वया वति
वापुलवनाः दिक्का या हेति पासां धालूहं ॥ ल्यता
या ज्वाला संविषा मता दतलेः त्रिक्का या त्रि व दतुं ता

या हं ॥ १८ ॥ को था या ज्वा फले मता वि ल्य ल्य या त्रि
नमता नां वृलु छ्य व नूहं ॥ अ य लि मा रुहा यदि
का य म द घ कंः त्रि चो ना या त्रि वि फल मद्रुहं ॥
॥ १९ ॥ ल्य च प न क्ष स ल्वा म्मा मूचो ना चो या क
चा

तनचोने जित्ता मालूहं॥ अयलि कायपुतामां
पापिवोन वाघोः जिनं गलतयांतयम जेहं॥१०॥
अयलि माहुहाययचसिंधु जो रेणा वकि काया सर
न सवनेहं॥ कायतवातह लिचाकन जित्ता य
धायाला जियापि गनावाला सियूहं॥११॥ जलाष

ला निनिमा जुजि माहुषो य के मतेः लो कनदया
दय मालूहं॥ मालुवति धलि घा साः हितान जो रेय
नाः जित्ता मविहा वई गुत्त वूहं॥१२॥ हाक गहत्या
लनपरी त्ति दोरि यागान इत्यः माति वृत्त्या पत्ता सिन

सिनाहं॥ मतावित्यस्य का रुपा श्रीममल्यनयावे

कृष्णलव एतानविलुह ॥ १२॥ द्रुवसका गेवाय

द्रुवसतो गिविष द्रुवसत्वाय तत्तचिनाहं॥ मि

पायाचो संचोनाः त्वाय भतविनाः विधिद्वे पुनया

वनहं॥ १५॥ राजा निह्या ॥ ग रुमदुदेगवाः एत

मदुल्यास्यवाः लयादुन्यहाय मप्रुत्वा नमुपुचा

॥ १॥ सिनाह्या वन्यत्यललात्यास्यवाः कतिताव

हवा ॥ २॥ कोस्यमदुजालवाः एतुमदुपां जचा रु

नरुनन्यावे वह थ्यात्येवा ॥ ३॥ तमायायका

किं वा सिद्धा यत् न तत्रा इति इत्येवा लख्यवाक्ये
सैकं चा ॥ १४ ॥ साप ल संपादि वाः स्या न कुप प्रपुचा
व जाल संस्थिता ति कतिङ्ग ल्या स्य वा ॥ १५ ॥ न्य अ ज
ष्य तु किं वा लुसि या ता यो चोः ज व व ला हा त स प

इ न च ल्या वा ॥ १६ ॥ ति ति वा प्या वा ग लं चोः मु न्या दि
त्या प ता ति वाः ल प्र लि त ह्या से त ल पु ल मा ला चो ॥
॥ १७ ॥ ल ति क लं को था चाः प धि हि ना पा ता वा जि डि
न्य ह्या मि ल्य इ या व ते नि दे वा ॥ १८ ॥ वृ षा इ न द

पिचाकलाकायत्यास्यजाः दुर्वन्यमनमदुज्याय
निचा॥५॥ इवजिबधिकवाजोह नरतिजाकवति
वमित्यनुपाचो न्यत्यास्यचा॥६॥ रागसिंह
स्या॥ ॥ लोकयानदिक् न विद्यनफुतकावः श्री
दाता जनपतिदबूहं॥ कलिषासमयसदाग्यन

कावविलवा सुषिनवनागराज्ञानं॥७॥ अदिंदर
नाथनलोकयाधंधकात्यसंवत्तचोयकावह
लूहं॥ मेघयाराज्ञात्यनगंधवप्रमुषनधिधि
विसंतोक्पुत्यहलूहं॥८॥ स्वल्पस्वल्पहरयद्रुप

कावतागमकाविलुहं॥तिरुत्तात्याकुरुसत्या।मिति
सातवन्यःहस्पीकधनकाववपुहं॥अथरिमि
साहायहिस्याइत्यामितत्याःहिनकासमाया
इवायेहं॥२॥दयतिवप्रसथाथकाकाज्ञां स
सातनिंयाय॥३॥सयाथपकोनहं ह्यंदकाया
वधितुयिष्यसमांलनियायुह॥थवथथ्यचोतले
तांतवलिनराहुजालःमुत्तुमुत्तुहेलावरागुरु
लोपलोपुहं ह्यंदकायावत्तुलावनिनपुहं॥५॥
अथलिमइपिनिदगनावन्यतेनाहिनकास
सायाज्ञाचोनहं॥आपुत्तुपंरालाहाहुहुनिमि

ति न श्रुया कारन दु दु ध का न्य श्रु ॥ नि वया का र
न मेव ता म ष म इ ति दु त वा पि त ला ष व या ह ॥ ५ ॥
सं ध का य म मा य रुः दि दु त था नि नि नि व ना चो य
क ल व न्य ह ॥ व नां वा नि म इ द न नि षा ठ ति न्य ह
न्य ॥ ६ ॥ त व ति न रा रु न दु व ज द य के त्य ना नि

ल ग रु ल ता जां न्य न्य ह ॥ व न ह प जौ र न प ग व
म इ ति न का म स भा ति लो र रु ल हः लाल को ला ष
रा हा रा रु वा हा रा प म ते ह ॥ ७ ॥ वा क रु व च न
पा लु वे म ते म इ चा क रु वा क का व दो व हः क रु

तिष्ठा नद नदि ता प्रा क ल सा जि नंद ता प्रा का
वृक्षो यतः भुलिषा लो म न्यं ता म इ वि ध य ध नू
: स ते न व ध य ध न नि त्ते न व ध य ध न आ वृक्ष
जि व न्य ते लूहं ॥ ८ ॥ कार न म इ य कं व ध ता ध

का धा इ कार न वृक्ष ध न्य निहं : ए रू तां रुतुं ल
आ वृक्ष थ य य जि न : नु ग ल क चिं ग ल रु लूहं : भु
लिषा न इ वे क या ला ए रू ल्या हा नि रु ह न्य
॥ ९ ॥ गृ प त रु प त पा प ग त रु इ रा रु प ता मि न

मिहं न ज्ञानाहः थु गुयानिमित्तं न संशय काय
मुमामिहं पततषा गुपतनकोयूहः थुलिषालाप
गतमगुलं सातुरंतन्य न्यूहं ॥१५॥ प्रनयो लान्न
रहे तूहलं इकाया वरति वा नित्ययूहः हृत्पुं

पदप्यतस्य थवदिवा थमन स्य स्य लान्नानं ३
तिरसतालुमिजिन्या ह्या व्या लया नाचो तस्य
स्तं हि या वा हि ता लुहं ॥१५॥ सया थ्य फवो नार
सिद्धये न्य धुनं जितानां चिह्नं इतापे न्यूहं

चिह्नं विषयं तां गुचिह्नं विषयं तां जि के इ व
इ मोह ल का वूहः इ मोह ल्या वृवा त्वा न न्या
ना वृत्ति ह्यं ज्ञा व न्यून ॥११॥ आवत ल्य वृ वृ
इ इ ज्ञा न पा ना मि ता दे वृ ज्ञां वा हि ज्ञा स्य वृ

लूहः वृत्त चां ह्य वृत्ति व ला य क या च वृत्ता त्वा न
ज्ञो इ वृत्त य ह त ज्ञा लूहः त्वा य ह त पा हा या न
चो त ले ज्ञा ला ग्य दि हि वा लूह ॥१२॥ इत्त व वृत्त
षा ज्ञा जिं वृत्ति या वृत्ता मि ताः तत्त्वा न वा पि

यगुल्लुन्यः इमितावुवाल्या न जो ना ववेया

जिनसकसितां यपेता यपेता कावहः सकत्यन

रसरंगदयका वमिहा ज्या धुनके ॥ मया स

लपुयगु भाषारक सु सु स संवार अमा वात्म

दिनहु न्यम लया वरपति ही जयपर कासः व

समा जतपर लपुहः सकत्य नरसरंगदयका

वः रसीहा ज्या धुनके ॥ वया ॥

सं
सं
या

प्रीथी नारंगं गुणयाम्य रात्रौ नै मालयाः
सामलथनेय ताम्र साम दयाः किं वा
लावायाना या फा के पी ना तया याः श्री
मदु फा के तया दाने म फ यः : भागु

गुणयाम्य कुल्या पाहायाना याः या
क पी था नाने मालयाः प्रीथी नारंगं
गुणयाम्य रात्रौ नै मालया सामलथने
य तान साम दया

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥
मा कुरु ॥ २॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥

अथि मतेले जव यक नी तया हुन्य ॥३॥ अत
नव रुन भ मुतां भवती न न गन न ग वन नूः ता
हा क बल का स्य वापि का पना स्य स्यः म ईर ह्य यावे
सं बी ज्या कः स सती त का वापि न ता पा के मत हं
॥४॥ कमल न यनं त्याम मु रुता थलः भ मि सं भ

लो सा द म क हंः बली मा कार न न स या वा हल
ना ग रुली से वा रु गा क हंः बी म म त लो क पना
सी थु य के स रु न्य ॥५॥ सा क इ ग्ग र न जित व
न म रु से व त्री नः नी दो न थ र म या मार हंः पी ज
न वा रु य के न या न ज म हाने थ र म थ थ या य

दुःख ॥६॥ एतया काल भउपनी म्म वमन तल वल पुत्रा कु
 भीजो ते मम म दुःख ॥ धल मतो लता वः भालित व
 तस्य भीषान जीत जीत स्यत हं ॥ सल मम दुःख या प
 नीषना व ग्याना पु ॥ अत्रु गस्य मज्ज गती स्य व स
 म मया पना सापो लल का पल दुःखाना हं ॥७॥ लन
 मल न्या स नी तु न मर स्य सु वि सी हल सं त कम

लङ्गा सुषी ॥ अथ मषु मया पना मम नो ला का
 ॥ कतु नाम यना थदल सन ला य हं ॥ ॥ गव
 पना थन भीषा केन वया वलो केन भीषा म
 कल हः न वना गती क प से भास मया गगन दा
 दल वृष दाम गा हं ॥१॥ वली दु दे व व यं धु द

श्री कालिका

य
 हं

बैंत सयम सूननः काल कोत महीत न बीयातं
नगर गा दे मयाः जवत पमाध न क मंद रुके स
लान प्रलोहं ॥ २॥ लाजा सके कोडा नः लोक न
थ ह या वन्य पाल सथे न कल ह लहंः गवर व
नाय नलो काना थ वाना व दा ड व दल स

नया तहं ॥ ३॥ थ गल दिन स न व नागा न
या व मस धाला परमान नागा तोहंः म धा ना
गात का व भा हा ल वी या व भानं द न लो के
ल था यात हं ॥ ४॥ प्र सा वा से ला व बेल का
ले स्य या वः सा सा या ह न ती ह ती यात हंः सि

या नाथे गन हं ॥ १॥ अली न नी द्वा द्वा सी या
 भा नु वल न म ते ले हं ॥ ४॥ न क स हि जा व वे ल्य
 नो तु य म हा ला जि नः प्रा मा या प्रा म न्य न्य म का
 ला हं ॥ न निल न्या वो द्वा वे ले रूप हि ला ज्ञा ला
 हा नुः जि ह्नु ति त ज्वा ल न का ज्ञा ल हं ॥ १॥ म
 न स मे ला ति दि न त य म ते धि र ज न वि र ह
 या या व ह ता स न हं ॥ म न न तु ज्ञा व दि न के ह
 न्य का म या आ णा वि र ह या ज्ञा व ह था स न हं
 ॥ ३॥ सि त र व च न त्व त्म इ द य ति न्य इ जि या

पुराणस्य नाम संज्ञा यथा न ग ल न हं ॥ स व न दि

न्य न्य म न्य ना गृ हो ग घा न्य न्य हं ॥ त्व ल्य
 ह न मि षा क ल्यः धि धी नृ ग ल स दा ल्यः दि म
 न स दे ह ल पा दि स न्य ॥ ५ ॥ व स न दि ह स त दि कः
 : का म घा ज्ञा ल न पु नोः चो ज्ञा था स रा ल पे म फ
 या हं ॥ व न्य नि त्त म न म दुः क लि हो ग स त्रि ड न
 दि व न पां त्मा गं णा घ म फ या हं ॥ ५ ॥ य या य थ्य
 घ ला ग म ल्यः धि धि मु ष इ तु इ त्थि मू लं ज न वि
 लु लु त्तित का ह य थ्य म ते ले र स य थ्य त ला थ्य
 र म य थ्य वि न र मृ त पि लि न्य हं ॥ ६ ॥ न ह र

न गृ हि नृ र्ग म हि न ग न न दं क ल्या नि हो क हि नि

वायुधिरजनदेव लपादिसनेहं॥ मययाका
 थंसा निःवलनदुर्वम इलिपतस अवस
 रमा लिहं॥४॥ वायुगथमथपिरतिः नासान
 परा इवम इतीला ताव वत्यमनमदुहं॥ वास
 वानथपिरतिः थानिचदि घोवम इथ नुगल

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

गध्यतथा वन्यहं ॥२॥ गता इत्येता इति
दित न्यमृत्त्यसथ्यन्यः नासा इति नदं ह यमद
हं ॥ गतानपा निव मषु दिस न्य च द्विधा द्वि
जित्तोष मया त्म द्विधा यत्ना ॥१॥ त्वय त्वत्त
न मग्मव्यः दन मिषारं गताः जित्तन द्वि वन

पां वल्लहं ॥ रह रपे सया मपुः रा जा उ व स र
हः थ नु गलं गध्य सह या य हं ॥११॥ यथा यथ
ये लल पे यता ले जां द इ मषुः थ गु त्वत्ता द्वि न
यथ या ह न्य हं ॥ य निव जां जमपुः रा मया रा
जा या था त दि मते दगध व्या जो न्य मद हं ॥१॥

गद्यमपि मया नोदति

अभिधाक्या नल गता

राग सिंहा ज्ञा ॥ ज्येष्ठा लभते लेखनिः सिंहा ज्ञा
 वन्यं ॥ ॥ वद स्यात्तु नी जो रिदिमपुनिदि
 धालस्ययतिमकासा निः स्वयनमन्याङ्गः पुन्य
 मसिधानिः दिधानि वप्रतिज्ञा ज्ञानि ॥ १॥
 ज्ञातं त्रिगालि निरति क म स धानिः दिचित्तवो

धलप्रेमप्रदा नि ॥ दिन ज्ञां द व निरुता त्रमु
 मालनिः लिथ्य स दि वर स या यतु नि ॥ २॥ त्वा
 नमुपुलितु नि स्य न के म ते व निः वल त हो द ज्ञा
 साद व नि ॥ हता स म ते ले ख निः वि न ति प्रा य थ
 निः तो ल ते व प्रो ज क माल नि ॥ ३॥ का म स्या न

राज शोभा विद्या दधि ग्राह्यं ॥ ६ ॥

या वा निरुमरुम स जो निः थम थथे म्म म्म नि
हं ॥ नृप प्रथी या धः नि आदे स द त थ निः काम
स म दु व ह्मा ज्ञा निरु ॥ ५ ॥ रा ग मि ह्मा ज्ञा ॥ ॥ न
दु र्म दे वि ह्मा नि सं क ल तार नि ॥ ॥ आ दि वि ना
य क ति वि जन प ति वि य न पु त वा व वि ह्मा न्यः सु व

न दे वि व ह्मा य नि हं स वा हि नी या स दि ल ह्मा ॥ १ ॥
ति सं वि नि क्ता पि नि दे वि मा ह्मे स्व रि र न स ह्मे ता व
वि ज्ञा क ह्मा उत्ता वा हि नि न दि न ज्ञा का व ज्ञा
न्य पि थ स वि ज्ञा क ह्मा ॥ २ ॥ म म्म र ह्मा य जो स वि ज्ञा
क ति मा को स को मा रि ज न नि दि ना म्म ॥ ॥

संपन्नं क्रुद्रोत्थं नारायणं निरूप्यं रुद्रं च विष्णुं च गुरु
धवाहिनिहं ॥२॥ वनधोरुप रुद्रं च स्मि इषिवा
हितिप्रारम्भे वा एहिदद्विन कालि कुरुः वा मुवे
पिथ सविज्ञा कुरु जोगानि इहापनिपिथ स

विज्ञा कुरु ॥३॥ देतया उत्तरदोस विज्ञा कुरु
पावोसः एतवेतालमृनका वुरुः कवानदाकी
निचं मुंदा जोगिनिः प्रेतपाह्मया चोत्तं विज्ञा
कुरु ॥४॥ तिहवाहिनि माहालद्विनिः इत्तानपि

श्रीगणेशाय नमः

अथ सर्वाङ्गाङ्कः त्रिपुल्लङ्गः त्रिलोचनं वदन्तिः
गमसु रतिज्ञातिरुहः ॥ ३ ॥ त्रिङ्गाङ्गावेक्ष्य सदा
गतकावविहैरवताथ या कृपानरुः सवत्सर
जात्यलोकविचालयात्यः हारषनलोकरक्षा
यातुहः ॥ २ ॥

श्रीगणेशाय नमः

रागतिङ्गाङ्गा ॥ ॥ त्रिवन्तिवलीमाहादेवतिरुव
भ्यानाथ ॥ ॥ षष्ठवदिभंगहिङ्गुलिरङ्गः सितसग
गमवाप्तविलं ॥ त्रिखन्त्यानाथरुतवसाथप्रेत
पिताचइत्तिरुलं ॥ १ ॥ इत्याललुदालः विनकेषा
लदिनगुहालंतेइथुलं ॥ रुससतितानाशन

श्रीगणेशाय नमः

श्रीगणेशाय नमः

हि सा वाहन युता त्वहा जुलं ॥ २ ॥ ग लं स को बालः

मोहल गुमाल नाग जनिन चिज्ञत लं ॥ वितति

नकुल जो रुति तुल चंडक लाने कुज्ञत ल ॥ ३ ॥

धु दं गुलिलासा दवुदवु जो सा वाहन युता धु मंज

ल ॥ धम उ व धु त वान स जुतः जा मि रुया व पहा

जुलं ॥ ४ ॥ ग जिह गितो सा अन कि न न सा घ स न

या व म स जुल ॥ मिषा स गोलं मि गुलिवो लं का

म ह्म देव रु स जुल ॥ ५ ॥ न व पे स नो दि प व पे स

दि दि सं व र ना थ ति वि वि लें ॥ र स न वि ह्या त्य

प्राप्य न हृत्यः सुसुहृन् हेलो वथा न कालं ॥ ६ ॥
कह्ल अनाथयाया हन्य ७ क हलो कया ७ क
रया हन्य सिवं ॥ ७ ॥ एतत्तिहा ज्ञया ॥ ॥ हृहृनि
सपि क न वल्लवो ना विहृ न्य ॥ १ ॥ सपना स पानि

वृजि था स व इ वः स न्य गरत्य या प्रहृता इ वः ६ ॥
व ल्य प्राज्ञि न वल्ल म दया वः जि म न ७ पि नि थ्य
ज्ञान हृ ॥ १ ॥ प्रानतु र्मानि व न य म जि थो व व
न यो विरह न ग ज्ञ वः नृ ग ल म दि ना व ल्ला हा त
दे ज्ञ वे दे न जि गु लो य म ति व ॥ १ ॥ जौ द न ज्ञ ल